(b) if so, the details of the panel; and

(c) when the report is likely to be submitted?

The Minister of State in the Ministry of Defence (Shri A. M. Thomas): (a) No, Sir. The Government have, however, taken various measures for the rehabilitation of Disabled Army personnel. The information regarding such measures was supplied to the House in the replies to Unstarred Questions Nos. 522 and 531 on the 21st February and Nos. 2075 and 2110 on the 14th March, 1966.

(b) and (c). Do not arise.

Defence Clubs

5034. Shri R. S. Pandey:
Shri R. Barua:

Will the Minister of **Defence** be pleased to state:

(a) whether Government propose to open Defence Clubs at various places in the country to provide recreation and other facilities to the Army Officers;

(b) if so, the outlines of the proposal in this regard;

(c) the total number of Defence Clubs at present in the country; and

(d) the number of Clubs to be opened during the next two years with names of places?

The Minister of State in the Ministry of Defence (Shri A. M. Thomas): (a) to (d). Defence Clubs are run at various stations under local arrangements and their number is not known. There is no proposal under consideration of Government to open such Clubs.

Mizos who crossed over to Pakistan

5035. Shri R. S. Pandey:
Shri R. Barua:

Will the Minister of **External Affairs** be pleased to refer to the reply given to Starred Question No. 1320 on the 25th April, 1966 and state:

(a) whether Government have received a reply from Pakistan in regard to their request to intern all the Mizo nationals who recently crossed over to East Pakistan;

(b) if so, the attitude of Pakistan Government in the matter; and

(c) whether Government have assessed the total number of Mizos who have thus crossed over to East Pakistan recently?

The Minister of External Affairs (Shri Swaran Singh): (a) and (b). The Pakistan Government has not yet replied to our request to intern the lawless Mizos who might have crossed over into East Pakistan.

(c) It has not been possible to make a firm estimate of the number of Mizos who may have crossed over to East Pakistan.

12.05 hrs.

CALLING ATTENTION TO MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE

Reported spying by CIA of USA on India's Nuclear Energy Capacity

डा० राम मनोहर लोहिया (फर्रुखाबाद): अध्यक्ष महोदय, मैं अविलम्बनीय लोक महत्व के निम्नलिखित विषय की ओर गृह-कार्य मंत्री का ध्यान दिलाता हूं और प्रार्थना करता हूं कि वे इस बारे में एक वक्तव्य दें—

> "संयुक्त राज्य अमरीका के केन्द्रीय गुप्तवार्ता अभिकरण द्वारा भारत की अणु क्षमता के विषय में जासूसी किये जाने के समाचार।"

Shrimati Savitri Nigam (Banda): I would request that no supplementaries should be allowed.... (*Interruptions.*)

Some hon. Members: Why?

Mr. Speaker: The hon. Minister.

The Minister of Home Affairs (Shri Nanda): All along we have been conscious of the importance of security and protection of our atomic energy establishment and installations. It has been repeatedly made clear that it is for peaceful purposes that we are developing our nuclear capacity. All possible steps to ensure the protection and security of our atomic installations have been taken and these steps are constantly under review.

The atomic installations are protected places entry into which is strictly regulated. Employment in Atomic Energy Establishments is subject to careful scrutiny to ensure the reliability of the employees. In addition, every person on entering service under the Atomic Energy Establishment is required to sign a declaration that he has read the provisions of section 5 of the Official Secrets Act, 1923 and again before leaving service he has to sign a declaration that he understands that the Official Secrets Act will continue to apply in future regarding the information he had acquired during his service under the Atomic Energy Establishment. There is, further, a police officer of Superintendent of Police's rank, on full time duty with the Establishment as Security Offier. Hon. Members can judge the adequacy and effectiveness of the measures taken from the fact that there has not been a single case of suspected leakage from the Atomic Energy Establishment.

I may add that Government have no material to support the report of the alleged spying by the Central Intellgence Agency of the United States of America on India's nuclear capacity. These precautions will continue to be taken and there need be no uneasiness amongst the hon. Members on this score.

Sir, I may add a word. I shall certainly welcome any observations and any questions that may be asked, but considering the nature of the subject—things like C.I.A., etc. etc.—I may not be able to say much regarding some of those things.

Some hon. Members: Why not?

Shri S. M. Banerjee (Kanpur): He has given out a statement already. But in his concluding statement, now, he has said something else. I do not know which of the statements is correct,—His earlier statement which was made available or his present one. (*Interruption*).

Mr. Speaker: Is there any other statement, or is it the same statement?

Shri Nanda: Only slight changes have been made.

Shri Hari Vishnu Kamath (Hoshangabad): Last minute changes; last second practically.

डा० राम मनोहर लोहिया : क्या मंत्री महोदय को इसके बारे में दो इत्तिलायें मालूम हैं—एक तो अणु के सम्बन्ध में कि अणु की खोज शान्तिपूर्ण चीजों के लिये इतनी आगे बढ़ गई है कि कई देशों में और खास तौर से अमरीका के प्रोजेक्ट प्लाऊ शेयर, प्रोजेक्ट नोम, के नाम से कोशिश की जा रही है कि पहाड़ों में सड़कें वगैरह बनाई जायें, जिसमें खर्च बहुत कम पड़ता है। लेकिन वह कोशिश ऐसी है कि कामयाब होने के पहले ही वह अणुबम अपने आप बन जाता है, यानी उससे आगे बढ़ कर के। तो शान्तिपूर्ण तरीकों में अणु का इस्तेमाल इस बात को मानकर चलता है, लेकिन वह लड़ाई के इस्तेमाल में आगे बढ़ जाता है, लड़ाई का इस्तेमाल उसमें आ जाता है। दूसरी इत्तिला यह है कि सेन्टा-बारबरा में सेन्टर फार दी स्टडीज़ आफ़ डेमोक्रेटिक इंस्टीचूशन्ज़ (जनतान्त्रिक संस्थाओं के अध्ययन के लिये केन्द्र) है, उसने वियतनाम में जो सी० आई० ए० है, उसके बारे में बड़ी खोज की, वहां पर मिचिगन स्टेट यूनिवर्सिटी के विद्यार्थी, खोजकर्ता,

अध्यापक और सरकार के सलाहकार गये, लेकिन वास्तव में वे जासूस लोग थे। जहां ये दोनों इत्तिलायें दे दी गई हैं, क्या मंत्री महोदय अब भी आश्वस्त हैं कि जो कुछ यहां पर अणु खोज हो रही है, उसके बारे में अमरीकी अपने इतने बड़े भारी जाल के द्वारा नहीं जान पाये होंगे ?

अध्यक्ष महोदय : एक चीज मैं कहना चाहता हूं कि जो कुछ होम मिनिस्टर साहब ने आखिर में कहा है, उससे मुझे यह डर लगता है कि बहुत से सवालों का जवाब यही देंगे कि इसका मैं पब्लिक इंटरेस्ट में जवाब नहीं दे सकता। अगर मेम्बर साहबान इजाजत दें, तो आपने जो कमेन्ट्स करने हों, वे कर लें, सजेश्चन्ज देनी हों, वे दे दें, क्रिटिसिज्म करना हो, वह कर लें, उसके बाद मैं होम मिनिस्टर साहब को इजाजत दे दूं कि अपने स्टेटमेन्ट में वह जितना बोलना चाहते हों, वह बोल दें। बजाय इसके कि वह हर एक सवाल का जवाब दें।

श्री स० मो० बनर्जी : इसमें क्या दिक्कत है, वह जवाब देते जायें। (**व्यवधान**)

डा० राम मनोहर लोहिया : मान लीजिये मेरे सवाल के बारे में जो आपने उनको . . . .

अध्यक्ष महोदय : मैंने आपके सवाल के बारे में खास तौर से नहीं कहा है।

डा० राम मनोहर लोहिया : लेकिन मैंने दो इत्तिलाओं का ज़िक्र किया है, प्रोजेक्ट प्लाऊ शेअर की इत्तिला और मिचिगन यूनीवर्सिटी की इत्तिला, इन दो इत्तिलाओं के बाद भी इनकी तसल्ली है कि इनके यहां की सूचनायें अमरीकियों के पास नहीं पहुंची हैं।

अ० .अ महोदय : इसके बारे में क्या कह सकते हैं।

डा० राम मनोहर लोहिया : लेकिन इतना तो बता सकते हैं कि उन्हें मालूम है या नहीं मालूम है, आखिर भारतवर्ष के गृह मंत्री हैं।

Shri Nanda: I have read something of the literature on the subject; all the articles in the New York Times and other means of information I have tried to avail myself of.

डा० राम मनोहर लोहिया : यह क्या मामला है, कुछ जानते हो नहीं, भारत के गृह मंत्री बने हुए हो।

श्री मधु लिमये (मुंगेर) : मैं पहले मंत्री महोदय का ध्यान न्यूयार्क टाइम्ज में 26 अप्रैल से 31 अप्रैल तक जो पांच लेख छपे हैं, उनकी तरफ दिलाना चाहता हूं . . .

अध्यक्ष महोदय : उन्होंने कहा है कि मैंने पढ़ लिये हैं।

श्री मधु लिमये : आप यह तो जानते ही हैं कि पंद्रह हजार लोग करीब करीब जासूसी का काम, सैंट्रल इंटेलीजेंस एजेंसी के मातहत कर रहे हैं सारे विश्व में। कई देश ऐसे हैं जहां अमरीकी कूटनीतिक काम करने वाले जो लोग हैं उनमें से 75 प्रतिशत तक जासूसी का काम करने वाले हैं। 26 तारीख के लेख में इस एजेंसी के कार्य को लेकर एक प्रश्न पूछा गया था। उसमें कहा है :

> "Whether or not political control is being exercised (over the CIA by the United States Government), the more serious question is whether the very existence of an efficient CIA causes the US Government to rely too much on clandestine and illicit activities, back-alley tactics, subversion and what is known in official jargon as "dirty tricks"."

उसके बाद इस सी० आई० ए० के खिलाफ जितने आरोप लगाये हैं उनकी एक सूची दी है। जिनका हिन्दुस्तान से, हिन्दुस्तान की

[श्री मधु लिमये]

नीति से सम्बन्ध है, उसी का मैं उल्लेख करता हूं । इससे आपको पता चलेगा...

एक माननीय सदस्य : पढ़े हुए हैं ।

श्री मधु लिमये : बाकी लोगों को भी पता चलेगा ।

1. Blotting the assassination of Jawaharlal Nehru of India
2. Provoking the 1965 war between India and Pakistan.

अध्यक्ष महोदय : सारी चीज को पढ़ने की जरूरत नहीं है ।

श्री मधु लिमये : एक दो वाक्य जो हिन्दुस्तान से सम्बन्ध रखते हैं वही मैं पढ़ रहा हूं । मैं बहुत संक्षेप में कह रहा हूं । मैं दो-तीन ही पढ़ रहा हूं जिनका हिन्दुस्तान से सम्बन्ध है । फिर कहा गया है इंडोनेशियन जनरल को खत्म करना । और

"Murdering Patrice Lumumba in the Congo"

इस तरह के सारे आरोप हैं । हमारा जो जासूसी विभाग है, गृह मंत्रालय के मातहत या सुरक्षा मंत्रालय के मातहत उनकी अकार्यक्षमता के कई सबूत सदन को मिल चुके हैं । जब काश्मीर में घुसपैठिये आये थे तब उनको पता तक नहीं चला था । और भी कई ऐसी बातें हैं । अभी एक मैमोरेंडम . . . .

अध्यक्ष महोदय : आप सवाल पर आयें ।

श्री मधु लिमये : मैं सवाल पर आ रहा हूं । यह मैमोरेंडम खरबूज और तरबूजा बेचने वाले के पास से मिला है । यह हिन्दुस्तान में बहुत बड़े पैमाने पर बंट रहा है । जासूसी विभाग को पता नहीं है । इसमें क्या है, इसको आप देखें ।

"Memorandum to His Excellency, Mr. Liu Shao-Chi, Chairman of the People's Republic of China."

यह पाकिस्तान में छपा है और इसको काश्मीर के कुछ लोगों ने लिखा है, ऐसा इसमें बताया गया है । और नीचे लिखते हैं :

"We are Your Excellency's most oppressed neighbours."

उसमें से एक वाक्य मैं पढ़ता हूं और खत्म करता हूं । उसमें कहा गया है :

"We would only like here to express our deep sense of gratitude to you and to the great Chinese people for the sincere ande courageous help given by you to us for crushing the Indian aggressors. This has cemented our relationship with China into an indissoluble bond of friendship and will for ever remain a treasured fact of our history."

श्री त्यागी (देहरादून) : कहां बंट रहा है ?

श्री मधु लिमये : यहां दिल्ली में । हमारे एक दोस्त को यह मिला है खरबूजा और तरबूज बेचने वाले की दूकान से । यह जो दाग लगा हुआ है, यह खून का दाग नही है, यह तरबज का दाग है । मैं इसको सदन पटल पर रख देता हूं . . .

अध्यक्ष महोदय : हर एक चीज को रखने की जरूरत नहीं है ।

श्री मधु लिमये : यहां पर गुप्तचर विभाग की कार्यक्षमता के बारे में बहस चल रही है ।

एक माननीय सदस्य : बहस नहीं चल रही है ।

अध्यक्ष महोदय : आप सवाल करें ।

श्री मधु लिमये : मैं सवाल कर रहा हूं । सी० आई० ए० के बारे में यह जो लिखा

है यह जो छप कर चीज आई है, क्या इसको जासूस विभाग को दिया जाएगा ? इस तरह के मेमोरेंडम बंटने के जो काम इस वक्त देश में चल रहे हैं, देश को तोड़ने वाले, देश को खत्म करने वाले काम, उनके बारे में क्या जासूस विभाग सावधानी बरतेगा ? आपका गुप्तचर विभाग हमारे जैसे लोगों के खिलाफ जासूसी का काम कर रहा है और जो देशद्रोही है, देश को तोड़ने वाले हैं उनके साथ रियायत कर रहा है । मंत्री महोदय का ध्यान मैं इस ओर दिलाना चाहता हूं ।

अध्यक्ष महोदय : बस ध्यान दिलाना चाहते हैं ?

श्री मधु लिमये : मैंने प्रश्न भी पूछा है कि क्या कर रहे हैं सी० आई० ए० के सम्बन्ध में जो लेखों में बताया है और मेमोरेंडम के बारे में ?

Shri Nanda: We shall take note of this information, which is partly precise and partly imprecise.

Shri Bhagwat Jha Azad (Bhagalpur): A series of articles have been carried in the New York Times and since many of the happenings reported in that paper have come true, so far as sabotage by CIA in different countries is concerned, may I know from the Home Minister, while taking the precaution of stationing a police officer and prohibiting entry into atomic installations, whether his attention has also drawn to the article in New York Times where it is said that the CIA agents themselves have got gadgets through which they transform the electric fittings in any house into receiving stations and get every news that they want? If so, may I know what precaution he is taking against such CIA spying in this country?

Shri Nanda: For several days past I have been discussing with the Director and officers of the Atomic Energy Establishment and also, on the other side, with our own Intelligence Agency, regarding the implications of the information that has been given there.

श्री सिद्धेश्वर प्रसाद (नालंदा) : एटोमिक एनर्जी एस्टेब्लिशमेंट में क्या कोई अमरीकी भी काम करते हैं और यदि करते है तो उनकी संख्या क्या है ?

Shri Nanda: There are no Americans.

Shri Inder J. Malhotra (Jammu and Kashmir): In view of the nature and work which is being carried on in our nuclear installations, I would like to know whether the whole security arrangement is a local arrangement of that very plant or it is being looked after by the Central Intelligence Agency?

Shri Nanda: It is both. Our Intelligence is concerned and it is also looking after it. There are also local arrangements that are necessary.

Shri Harish Chandra Mathur (Jalore): May I know whether the hon. Home Minister has thought it necessary and whether he has discussed this matter with the U.S. Ambassador here, in view of the fact that such things are likely to generate a lot of lack of goodwill, which is already there, and which is likely to be very seriously affected?

Shri Nanda: No, Sir; I have not discussed this with the Ambassador. About what we further need to do in regard to that, my colleague may consider that.

श्री यशपाल सिंह (कैराना) : मिनिस्टर साहब को क्या जरूरत पड़ी है कि बार-बार यह कहते फिरते रहें कि हम पीसफुल युटिलाइजेशन के लिए इसको पैदा कर रहे हैं ? यही चीज है जोकि दूसरों को भड़काती है और उन्हें इन चीजों को करने के लिए मजबूर करती है । उनको खुलेआम कहना चाहिये कि हम पैदा कर रहे हैं और जिस तरह से

[श्री यशपाल सिंह]

जरूरत होगी उस तरह से इसका इस्तेमाल करेंगे। मैं जानना चाहता हूं कि क्या इस पर आपने गौर किया है?

Some hon. Members *rose*—

Mr. Speaker: Shrimati Renu Chakravartty.

Shrimati Renu Chakravartty (Barrackpore): Sir, this statement which has been given by the hon. Home Minister gives a very complacent reply. He says that there has not been a single case of suspected leakage from the Atomic Energy Establishment. He is very clear on that point. I would like to know, having read the various reports, whether he realises that the net-work is much wider than the exact establishment, that, we now fear, even organisations like the cultural freedom organisations and the various college cultural organisations are being utilised and in that way this information is gathered; if so, I would like to know whether the Government is really aware of the dangers inherent in this vast net-work and whether our Intelligence Service is capable enough to tackle the problem? After having known these facts, I would like to know whether we feel confident that the Central Intelligence Bureau is in a position to ward off any espionage activity in this country?

Shri Nanda: I agree with the hon. Member that there is need for constant increasing vigilance in view of all that we know about the methods etc.

श्री स० मो० बनर्जी: सैंट्रल इंटेलीजेंस एजेंसी आफ दी यू० एस० ए० जो है और जिसके बारे में यह सवाल पूछा जा रहा है, मैं जानना चाहता हूं कि क्या इस सवाल को पूछने से पहले भी मंत्री महोदय का ध्यान इस चीज की ओर आकर्षित किया गया था? यदि किया गया था तो क्या यह बात भी सही है कि केवल अमरीकी ही जो हमारे देश में हैं या दूसरे-दूसरे देशों में हैं वही जासूसी का काम नहीं करते हैं बल्कि कुछ हिन्दुस्तानियों की मार्फत भी उनको तरह-तरह की आर्गेनाइजेशंज में लेकर, पैसा दे कर और बाहर भेजने का लालच दे कर ऐसी चीजें वे कराते हैं? यदि यह ठीक है तो इसको काउंटर एक्ट करने के लिए, इसको रोकने के लिए क्या इंतजाम हम लोगों ने किया है? सी० आई० बी०, सी० बी० आई० या और किसी सैंट्रल एजेंसी की मार्फत आपने जांच कराई है या नहीं?

श्री नन्दा : जो कहा गया है वह हमारे ध्यान में है। उसकी तरफ हमारा ध्यान है। वह जरूरी भी है और कर भी रहे हैं। जिस एजेंसी का जिक्र किया है, इंटैलीजेंस का जिक्र किया है, वह कई चीजों की देखभाल करती है।

Shri S. M. Banerjee: My question was as to when it was brought to the notice of the hon. Minister.

अध्यक्ष महोदय : आपने जिस एजेंसी के बारे में कहा है उसके बारे में उन्होंने कहा है कि वह ध्यान रखती है।

श्री स० मो० बनर्जी : बहुत डर कर कह रहे हैं . . .

अध्यक्ष महोदय : हिम्मत . . .

श्री स० मो० बनर्जी : यह चीज उनके ध्यान में कालिंग एटेंशन के पहले आई थी या इसका नोटिस मिलने के बाद आई थी?

श्री नन्दा : इससे बहुत पहले मैं जानता था।

Shri Joachim Alva (Kanara): While commending the efforts made by Government in that not a single leakage has occured in our atomic energy establishment like what has occured both in the United States and in the

United Kingdom, may I know whether Government has read the points that have been pinpointed in those articles of the New York Times, specially that the Central Intelligence Agency has been held as the invisible government of the United States, that this secret body is known to have overthrown governments and installed others, raised armies, staged an invasion of Cuba, spied and counter-spied, established airlines, radio stations and schools and supported books, magazines and businesses? Also, may I add, during the middle of the 1950s an attempt was made to subvert the Government of the mighty Jawaharlal Nehru but they were only afraid that because of popular opinion it could not be done. The most important thing in this article is about the last Director, Allen Dulles:—

> "For instance, they say, he was slow to mobilise the CIA to obtain information about nuclear programmes in India".

All that I wanted to know is whether the hon. Minister has noted how these points have been pinpointed in these articles.

Shri Nanda: Yes, Sir.

Shri Joachim Alva: May I know what Government has done?

श्री प्रकाशवीर शास्त्री (बिजनौर) : गोपनीयता की शपथ लेने के बाद भी क्या इस संगठन में कार्य करने वाले कुछ व्यक्तियों की गतिविधियां पिछले सप्ताहों में सन्देहास्पद पाई गई थीं, यदि हां तो क्या इन सन्देहास्पद गतिविधियों के कारण किसी कार्यकर्ता को इस संगठन से पृथक् भी किया गया है ?

श्री नन्दा : हर एक व्यक्ति जो एस्टेब्लिशमेंट के अन्दर दाखिल किया जाता है उसके बारे में जांच की जाती है, और जहां तक मेरा ख्याल है ऐसा मौका नहीं आया कि किसी के खिलाफ कोई एन्क्वायरी करनी पड़ी हो ।

Shri Alvares (Panjim): The Home Minister is simple enough to believe that mere reiteration of the fact that our atomic energy establishment is confined to peaceful purposes will shy off potential American agents from the Establishment. In view of the fact that CIA agents function in more divergent ways than the Home Minister can comprehend, may I know whether he has kept surveillance on all potential personnel of the American Embassy?

Shri Nanda: I have already covered that aspect. We have to do our best in all directions.

Shri Hem Barua (Gauhati): In view of the fact that there are certain startling disclosures in a certain section of the American press to the effect that the Central Intelligence Agency of America is having cells in the universities also not only in their country but in other countries also where America has got an opportunity to make an inroad through economic aid, may I know whether our Prime Minister is in a position to give us an assurance against this pattern of the CIA conspiracy being perpetrated in the proposed Indo-US Foundation that is going to be established in this country?

The Prime Minister and Minister of Atomic Energy (Shrimati Indira Gandhi): As I have already said in this House, we shall certainly not allow any such activities and we shall see that the Foundation will function.... (*Interruption*).

Shri Vasudevan Nair (Ambalapuzha): Why should it function? It should be scrapped rightaway. Scrap it rightaway.

Shrimati Indira Gandhi: I was asked a specific question whether these activities would be permitted. Naturally, we will do our best not to permit them and to curb them when they show any signs.

Shri Hem Barua: It is not a question of permitting these activities. No sane government will ever permit them. But the question is whether they are in a position to stop such activities because America has got a tendency to make an inroad into the country—it has happened all over—through economic aid.

डा० राम मनोहर लोहिया : अध्यक्ष महोदय, क्या उनकी आज्ञा ले कर वह करेंगे ।

12.35 hrs.

QUESTION OF PRIVILEGE

Mr. Speaker: There is a privilege matter raised by Mr. Madhu Limaye.

Shri S. M. Banerjee (Kanpur): I want to raise a point of order.

Mr. Speaker: One thing has not finished; the other thing has not begun.

Shri S. M. Banerjee: I wanted to raise a point of order about the rules.

श्री मधु लिमये (मुंगेर) : अध्यक्ष महोदय, मैं संविधान की धारा 105 और नियम 224 के अन्दर प्रधान मंत्री जी के खिलाफ विशेषाधिकार का प्रश्न उठाना चाहता हूं । आपको याद होगा कि 29 अप्रैल को उड़ीसा में जो अकाल की स्थिति है और भुखमरी से जो मौतें हुई हैं उनके सम्बन्ध में आप ने एक ध्यान आकर्षण नोटिस स्वीकार किया था । उसके बारे में अन्न मंत्री ने वादा किया था कि मैं सदन में उपस्थित रहूंगा और इस नोटिस के जवाब में जो वहां की स्थिति है उसके सम्बन्ध में निवेदन करूंगा । लेकिन उस दिन खाद्य मंत्री सुब्रह्मण्यम साहब सदन में उपस्थित नहीं थे । उनके द्वारा जो पत्र आपको लिखा गया था उसे आप ने पढ़ कर सुनाया था । उसमें उन्होंने माफी वगैरह भी मांगी थी और कहा था कि पहले से उन्होंने यह सब कार्यक्रम ले लिया था इसलिये वह यहां उपस्थित नहीं रह सके । उसके बाद मुझे पता चला कि पूना के दैनिक "सकाल" में एक खबर छपी है और उससे पता चलता है कि सुब्रह्मण्यम साहब जो जालना गये वह प्रधान मंत्री की सलाह पर गये । इस रिपोर्ट में साफ बतलाया गया है, मराठी में है । दो वाक्य ही हैं । उसकी हैडिंग दी है :

"लोकसभा काही अन्न देणार नाही"

यह सुब्रह्मण्यम साहब का भाषण है जालना में जो उन्होंने एक परिसम्वाद में किया । उसमें वह कहते हैं :

> "आज मला लोकसभेत ओरिसाबाबत निवेदन करावयाचे होते, परंतु इकडे यावयाचे असल्यामुळें मी पतप्रधानाना विचारले, 'तुम्ही अगोदर शेतकऱ्यांकडे जा कारण ते आपणास धान्य देतील लोकसभा काही धान्य देणार नाही।"

इसका हिन्दी में मतलब है कि प्रधान मंत्री जी ने सुब्रह्मण्यम साहब से कहा कि आप जालना जाइये । वहां किसान आयेंगे । किसान आप को खाद्य देंगे, लोक-सभा तो खाद्य देने वाली नहीं है । इसलिये लोक सभा में उपस्थित रहना कोई जरूरी नहीं है ।

अब, अध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन करना चाहता हूं कि उस दिन जिस विषय पर हम विचार कर रहे थे वह कोई मामूली विषय नहीं था । उड़ीसा के बारे में था । वहां अकाल की स्थिति इतनी गम्भीर है, अखबारों में खबरें आ चुकी हैं । विधान सभा के सभापति ने निर्णय दे दिया कि मौतें भुखमरी के कारण हुई

अध्यक्ष महोदय : अब यह सवाल नहीं है कि उस दिन रहना जरूरी था या नहीं । सवाल यह है कि जो लफ्ज अखबार में निकले हैं वह ठीक हैं या नहीं । आप मुझे उनसे पूछने दीजिये ।